दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-II (प्रश्नपत्र-2)

DTVF/18(JS)–HL-**HL2**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Pradeep Kumar Dwivedi

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 02 10/07/2018

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

0	8	6	0	5	2	0

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained):

टिप्पणी (Remarks):

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित पद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में ससंदर्भ व्याख्या कीजिये। 10 × 5 = 50

(क) सतगुरु लई कमाँण करि बाँहण लागा तीर।
एक जु बाह्या प्रीति सूँ भीतरि रह्या सरीर।।

गुरु की महिमा 'कबीर' की सखियों का एक मुख्य विषय रहा है जो नाथ-संप्रदाय व वैष्णव मत का उन पर प्रभाव कहा जाता है। डा. 'श्यामसुन्दर दास' द्वारा संग्रहित 'कबीर ग्रंथावली' के इस दोहे में भी गुरू की महिमा का बखान किया गया है।

कबीर कहते हैं कि सतगुरू ने ज्ञान रूपी तीर अपने वचनों रूपी कमान से ऐसा चलाया कि मुझे परमतत्व की सार्थक अनुभूति हो गई। जैसे ही गुरू ने मुझे परमतत्व का मार्ग बताया वैसे ही मैं कृतार्थ होकर इस जीवन के उद्देश्य को जान गया।

सौन्दर्य : 1. भाषा : पंचमेल / खिचड़ी भाषा
बाँहण, कमाँण आदि में खड़ी बोली के प्रारंभिक लक्षण दिखते हैं।

2. रस – शान्त, भक्ति

3. अलंकार – रूपक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष: 1. सतगुरु का महत्व कबीर पर नाथ-पंथ, वैष्णव मत तथा सूफी परंपरा के प्रभाव का द्योतक है।

2. जायसी के काव्य में भी सतगुरु का वर्णन मिलता है -

" गुरु सुआ जेहि पंथ दिखावा,
बिन गुरु जगत को निरगुन पावा "

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) निरखत अंक स्यामसुंदर के बार बार लावति छाती।
लोचन जल कागद मसि मिलि कै ह्वै गई स्याम स्याम की पाती।।
गोकुल बसत संग गिरिधर के कबहुँ बयारि लगी नहिं ताती।
तब की कथा कहा कहौं, ऊधो, जब हम बेनुनाद सुनि जाती।।
हरि के लाड़ गनति नहिं काहू निसिदिन सुदिन रासरसमाती।
प्राननाथ तुम कब धौं मिलोगे सूरदास प्रभु बालसँघाती।।

प्रस्तुत पद्यांश आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा संकलित तथा सूर-कृत 'भ्रमरगीत' से अवतरित है।
पंक्तियों में गोपियाँ प्रकृति के माध्यम से श्रीकृष्ण की उपस्थिति और वियोग की दशा को व्यक्त कर रही हैं।

व्याख्या
गोपियाँ श्रीकृष्ण द्वारा भेजे गए पत्र को बार-बार देख कर हृदय से लगाती हैं तथा भाव-विह्वल हो जाती हैं। जिससे अश्रु और स्याही मिलकर पत्र श्रीकृष्ण के श्याम रंग समान ही श्याम अर्थात् काला हो गया है।
गोपियाँ कहती हैं कि जब तक श्रीकृष्ण यहाँ थे तब तक गोकुल की पवन हवा हमेशा शीतल तथा सुख-दायिनी प्रतीत होती थी। हम सदैव बाँसुरी के स्वर में मस्त रहती थीं। श्रीकृष्ण की उपस्थिति ऐसी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रसमयी थी कि हम सदैव राग-विभोर रहती थीं।
गोपियाँ श्री कृष्ण का आह्वान करते हुए पूछती हैं कि हे बालसखा तुम कब हमसे मिलने वापस आ रहे हो।

सौन्दर्य : भाषा - ब्रजभाषा
रस - विप्रलंभ श्रृंगार
अलंकार : - 'स्याम स्याम' में यमक.
अनुप्रास ~~अयार~~ आदि

विशेष : 1. प्रकृति के प्रति संवेदन-आरोप का भाव। यहाँ प्रकृति केस्वरूप को गोपियों के भावानुसार परिवर्तित दिखाया है जो सहज मनोविज्ञान का उत्कृष्ट उदाहरण है।
2. जायसी के पदमावत में भी प्रकृति का ऐसा ही स्वरूप नागमती के वियोग-वर्णन के सापेक्ष दिखाया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) रोई गँवाए बारह मासा । सहस सहस दुख एक एक साँसा।
तिल तिल बरख बरख परि जाई । पहर पहर जुग जुग न सेराई।।
सो नहिं आवै रूप मुरारी । जासौं पाव सोहाग सुनारी ।।
साँझ भए झुरि झुरि पथ हेरा । कोनि सो घरी करै पिउ फेरा? ।।
दहि कोइला भइ कंत सनेहा। तोला माँसु रही नहिं देहा।।
रकत न रहा, विरह तन गरा । रती रती होइ नैनन्ह ढरा।।
पाय लागि जोरै धन हाथा। जारा नेह, जुड़ावहु, नाथा ।।
बरस दिवस धनि रोई कै, हारि परी चित झँखि।
मानुष घर घर बूझि कैं, बूझै निसरी पंखि।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नागमती के वियोग वर्णन को रामचन्द्र शुक्ल प्रभृति आचार्यों ने हिन्दी साहित्य की सर्वश्रेष्ठ वस्तु कहा है। ऐसा ही मार्मिक वर्णन यहाँ नागमती वियोग खंड से उद्धृत हो 'जायसी' के कवित्व की उत्कृष्टता को संकेतित कर रहा है।

नागमती अपने वियोग की व्याख्या करते हुए कहती है कि मैंने रो-रो कर बारह महीने बिता दिये। मेरी एक-एक साँस दुख से भरी रही। एक-एक पल ऐसे व्यतीत हुआ मानो एक-एक वर्ष हो फिर भी मुझे अपने पति का संयोग प्राप्त नहीं हुआ। सुबह से शाम बार-बार मैं पथ निहारती हूँ कि वह समय जल्द आ जाए जब पति वापस आ जाएं।

पति के वियोग में जलकर नागमती कोयल के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

समान हो गई है, शरीर में थोड़ा भी माँस नहीं बचा है। न खून बचा है, जो था वह या तो विरहाग्नि में जल गया या फिर अश्रु-धार से बह गया।

नागमती अपने पति से मन ही मन प्रार्थना कर रही है कि अब मुझे अपने स्नेह से ठण्डक प्रदान करो।

सौन्दर्य: भाषा - ठेठ अवधी
रस - वियोग श्रृंगार
अलंकार - अनुप्रास, उपमा

विशेष: 1. षठ ऋतु व बारह-मासा काव्यरूढ़ि का प्रयोग

2. आचार्य शुक्ल सम आलोचकों ने 'बहि कोयला ...' जैसी ऊहात्मक पंक्तियों के कारण ही जायसी के प्रेम वर्णन पर फारसी प्रभाव को स्वीकार किया है।

उ.

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) शत घूर्णावर्त, तरंग-भंग उठते पहाड़,
जल राशि-राशि जल पर चढ़ता खाता पछाड़,
तोड़ता बन्ध-प्रतिसंध धरा, हो स्फीत-वक्ष
दिग्विजय-अर्थ प्रतिपल समर्थ बढ़ता समक्ष।

प्रस्तुत पद्यांश सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की लम्बी कविता 'राम की शक्ति-पूजा' से उद्धृत है। यहाँ हनुमान द्वारा शक्ति से युद्ध हेतु प्रस्थान को वर्णित किया गया है।

जैसे ही हनुमान शक्तिलोक की ओर प्रस्थान करते है वैसे ही बवंडर सा उठने लगता है। पहाड़ डगमगाने लगते हैं तथा जल में तीव्र तरंगे उठने लगती हैं।

समस्त बाधाओं को पार करते हनुमान जो कि दिग्विजय है, ~~प्रति~~ तथा सर्व समर्थ हैं, शक्तिलोक की ओर बढ़ रहे हैं।

सौन्दर्य : रस - वीर रस
भाषा - तत्समबहुला खड़ी बोली
अलंकार - 'स्फीत-वक्ष' में रूपक

विशेष - 1. निराला की कविता में व्याप्त समास-गुण का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण राम की शक्ति-पूजा में मिलता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. पंक्तियाँ निराला पर वैष्णव परंपरा व उत्तर-भारतीय प्रभाव को दर्शित कर रही हैं जहाँ हनुमान की शक्ति को देवी की शक्ति से अधिक बताया जाता है।

3. प्रकृति का चित्रण वातावरण को सघन बनाने की दृष्टि से किया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ङ) *आनन्ददात्री शिक्षिका है सिद्ध कविता-कामिनी,*
है जन्म से ही वह यहाँ श्रीराम की अनुगामिनी।
पर अब तुम्हारे हाथ से वह कामिनी ही रह गई,
ज्योत्स्ना गई देखो, अँधेरी यामिनी ही रह गई!

नवजागरण के प्रभाव से 'मैथिलीशरण गुप्त' ने सम्पूर्ण 'भारत-भारती' में भूतकाल का गौरवमयी चित्रण किया है तथा वर्तमान की दुखद स्थितियों को उजागर किया है। ऐसा ही भाव यहाँ वर्तमान की कविता में व्याप्त दोषों को उद्घृत कर कवि परम्परा को सही दिशा पर लाने के आह्वान में दिखता है।

गुप्त जी कहते हैं कि कविता तो मूलरूप से परमानन्द का साधन तथा समाज को संस्कृति व शिक्षा प्रदायिनी रही है। मानस के समय से ही राम-गुण समेत समस्त शुभ-वचन कवि-कर्म के माध्यम से ही स्फुटित हुए हैं।

परन्तु हे कवियो, तुमने सिर्फ भोग-श्रृंगार तक सीमित कर कविता को दूषित कर दिया है। उजेले की जगह अब वह अज्ञान रूपी अंधकार फैलाती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष : 1. भूतकाल का गौरवमयी चित्रण व वर्तमान की दुर्दशा-वर्णन के माध्यम राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदर्शवाद की अभिव्यक्ति हुई है।

2. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'कविता क्या है' में भी कवि-कर्म के उद्देश्य निश्चित किये हैं तथा इसे भाव-योग के समकक्ष बताया है।

3. अभिधा शब्दशक्ति सम्पन्न भाषा सर्वजन-ग्राह्य बन पड़ी है

4. तत्सम शब्दों के प्रयोगोपरान्त भी भाषा में क्लिष्टता नहीं आने पाई है।

5. रूपक व मानवीकरण अलंकार की छटा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. (क) 'कबीर का मूल व्यक्तित्व कुछ भी हो, उनके काव्य की श्रेष्ठता में कोई संदेह नहीं।' विचार कीजिये। 20

कबीर का व्यक्तित्व आलोचकों में विवाद का विषय रहा है। कुछ आलोचक उनके समाज-सुधारक व्यक्तित्व को वरीयता देते हैं तो कुछ उन्हें सन्त मानते हैं। कहीं उन्हे नाथ-पंथी योग से प्रभावित माना गया है तो कहीं उनके भक्त रूप में उनके मूल व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति का विचार प्रकट किया गया है।

मूलतः कबीर का व्यक्तित्व था ही ऐसा कि उन्होंने जिस क्षेत्र में कदम रखा, उसमें अपना अधिकार कर लिया और कवित्व भी ऐसा ही उदाहरण है।

हालांकि आचार्य शुक्ल प्रभृति आलोचकों ने उनकी उक्तियों की प्रशंसा करते हुए भी उनकी भाषागत साधारणता पर व्यंग्य किया है पर कबीर का उद्देश्य कभी कवि भाषा की उत्कृष्टता को छूना था ही नहीं वे खुद कहते हैं:—

"मसि कागद छुवौ नहिं, कलम गहि नहिं हाथ

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तब भी उनके काव्य-कर्म में सहज रूप से उत्कृष्टता का ~~ब~~. वह स्तर मिलता है जो अन्यत्र दुर्लभ है।

वे लोकभाषा का पक्ष लेते हुए 'संस्किरत' को कूप जल बताते हैं तथा सहज भाषा में ही अपनी उक्तियाँ करते हैं।

उनके सूफी-भाव सम्बन्धित कर्म में भावना का वह चरम-स्तर देखने को मिलता है जो स्वयं सूफी कवियों को लज्जा दे। यथा-

'हमन है इश्क मस्ताना, ~~हमें दुनियादारी~~
~~हम~~ हमन से होशियारी क्या।
रहें आजाद या जग से
हमें दुनिया से यारी क्या॥

भले ही वे बिम्ब, प्रतीक जैसी नवीन अवधारणाओं से अपरिचित रहे हों परन्तु सहज रूप से उनकी साखियों में ये सभी तत्व उपस्थित हैं।

" जल में कुम्भ, कुम्भ में जल है, भीतर-बाहर पानी
फूटा कुंभ, जल जलहि समाना इहै तथ कहै ग्यानी'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"मैं तो कूता राम का, मुतिया मेरा नाँव" कहते हुए भी कुत्ते की सम्पूर्ण निरीहता को पाठक के इन्द्रिय बोध का विषय बना देते हैं।

इसी प्रकार अलंकारों का अत्यन्त सहज प्रयोग उनके काव्य में हुआ है चाहे वह यमक हो, श्लेष हो या अन्योक्ति हो।

कबीर ने अपने कवि कर्म के उद्देश्य भी वही रखे तो वर्तमान कवि-कर्म उत्कृष्ट मानता है चाहे वह समाज की बुराइयों का निरूपण हो या फिर गहन भावाभिव्यक्ति।

नाथपंथी संधाभाषा संबंधित उक्तियाँ भले ही कहीं कहीं अबोधगम्य हो गई हों परन्तु उनकी समस्त कविताएँ अपने आप में किसी भी सजग कवि के लिए ईर्ष्या का विषय बनने के लिए पर्याप्त हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) वक्रता और वाग्विदग्धता के धरातल पर भ्रमरगीतसार का आधार लेते हुए कवि सूरदास का मूल्यांकन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सूरदास के पद ब्रज-भाषा की उत्कृष्टता व श्रृंगार रस के तत्व-निरूपण हेतु प्रसिद्ध है परन्तु आचार्य शुक्ल के अनुसार जहाँ उन्हें सबसे अधिक सफलता मिली, वह है वक्रता और वाग्विदग्धता का प्रयोग।

सूर ने ही इस परंपरा का सूत्रपात किया और उन्होंने ही इसे उत्कृष्टता ~~के~~ उस स्तर पर पहुँचा दिया जहाँ कोई और पहुँच न सका।

सूर ~~ने~~ ने भाव-प्रेरित वक्रोक्तियों द्वारा गोपियों की भावनाओं की मार्मिक अभिव्यंजना की है। कृष्ण के विरह में गोपियाँ पहले ही ~~6~~ व्याकुल हैं, ऊपर से जब वे उद्धव के ज्ञान-मार्गी वचन सुनती हैं तो दुविधा में पड़ जाती हैं। एक तरफ वे अपनी रसमयी भक्ति को बचाना चाहती हैं तो दूसरी तरफ उद्धव का अपमान भी नहीं करना चाहतीं ~~थे~~ तब उनके कथन वक्र

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

होने लगते हैं -

यथा -

" निरगुन कौन देस को बासी
~~कहँ रहत~~ को है जननि, जनक को कहियत
कौन नारि, को दासी ?"

वे वाग्विदग्ध शैली में उद्धव का उपहास भी करती हैं -

" आयो घोष बड़ो व्यापारी
लादि खेप गुन- ग्यान जोग की, ब्रज में आनि उतारी "

जब उद्धव अपने ज्ञान -मार्गी प्रवचनों से बाज नहीं आते तो वे वक्र शैली में ही कहती हैं
" ऊधौ कोकिल कूजत कानन
तुम हमको उपदेस करत हो, भस्म लगावत आनन "

इस प्रकार निर्गुण पर सगुण की स्थापना, गोपियों की भक्ति के रसमयी निरूपण में वक्रता और वाग्विदग्धता की चरमावस्था को सूर ने छुआ है और इन शैलियों का इतना सुन्दर प्रयोग अन्यत्र

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

देखने को नहीं मिलता।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) आपके मत से कबीर और तुलसी में किसे 'लोकनायक' की संज्ञा देना अधिक उचित होगा? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

'लोकनायक' शब्द की व्याख्या प्रत्येक आलोचक व व्यक्ति अलग-अलग तरीके से करता है। किसी की दृष्टि में सामाजिक बुराइयों यथा आडंबर, जाति-वाद, सांप्रदायिकता आदि की निर्मम अभिव्यक्ति ~~लोक~~ लोकनायकत्व का परिमाण है तो आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी प्रभृति बुद्धिजीवी कहते हैं कि "भारत का लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय की विशाल चेतना लेकर प्रस्तुत हुआ हो"।

यूँ तो कबीर ने निर्गुण-सगुण विवाद हो या हिन्दू-मुसलमान का साम्प्रदायिक विवाद, सभी को बिना लाग-लपेट के कड़ी फटकार लगाते हुए ईश्वर के एकत्व के माध्यम से सामाजिक समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया है परन्तु समन्वय की चेतना की जैसी गहन अभिव्यक्ति तुलसी के यहाँ मिलती है वह दुर्लभ है।

वे सगुण-निर्गुण विवाद का शमन करते हैं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तथा लिखते हैं
" अगुनहिं-सगुनहिं नहिं कछु भेदा, गावहिं मुनि पुरान बुध बेदा "

• वहीं वे 'सिव द्रोही मम दास कहावा' के माध्यम से शैव- वैष्णव मतों का भी मेल कराते चलते हैं।

समन्वय का सर्वोत्कृष्ट रूप वहाँ दिखता है जब वे समस्त सामाजिक बँटवारे व ऊँच-नीच को पीछे छोड़ते हुए शबरी की भक्ति व निषाद के प्रेम को स्थापित करते हैं तथा समाज के निचले तबके को ईश्वर की भक्ति का बराबरी का अधिकारी बताते हैं

" नव महुँ एकौ जिन्ह के होई, नारि-पुरुष सचराचर कोई
सोइ अतिसय प्रिय भामिनि मोरे, सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरे"

तुलसीदास ने भाषाई समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहा है
" का भाषा का संस्कृत, प्रेम चाहिए सांच"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तथा 'मसीत को सोबो' कहकर साँप्रदायिक सद्भाव की स्थापना का उद्घोष किया है।

अतः समग्रतः दोनों ही कवियों का काव्य लोकनायकत्व की परिधि को संपूर्णता में छूता है परन्तु तुलसी के यहाँ सघनता का स्तर निश्चित तौर पर अधिक है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'सूर के उद्धव एक प्रकार से कृष्ण (शासक) एवं गोपियों (प्रजा) के बीच बिचौलिये नेता के प्रतीक हैं। इस रूप में यह प्रतीक आज भी उतना ही प्रासंगिक है।' क्या आप इस मत से सहमत हैं? अपना अभिमत सोदाहरण स्पष्ट करें। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उत्कृष्ट रचनाओं का एक प्रमुख लक्षण यह भी है कि वे युग-परिवर्तन के साथ विभिन्न अर्थों को ग्रहण करती हैं तथा कालजयी हो अपनी प्रासंगिकता सिद्ध करती हैं।

ऐसा ही एक अर्थ-विधान आलोचकों द्वारा भ्रमरगीत को दिया गया है। यह मत प्रकट किया जाता है कि जिस प्रकार आज के राजनैतिक माहौल में सत्ता प्राप्ति का एकमात्र साधन लोगों का समर्थन है, लोकतन्त्र में जन-समर्थन के बिना सत्ता संभव नहीं तथा निर्वाचित व्यक्ति जिस प्रकार चयनित राजधानी में जाकर आमजन को विस्मृत कर देते हैं उसी प्रकार कृष्ण ने पहले तो गोपियों का प्रेम प्राप्त किया तथा प्रेम प्राप्त कर यश अर्जित किया तथा फिर मथुरा जाकर उन्हें भूल गए।

इसी प्रकार जैसे चुनावपूर्व जनता की

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नाराजगी दूर करने के लिए नेता किसी बिचौलिये के माध्यम से घोषणाएँ करवाकर जनता का ध्यान भटकाता है, उसी प्रकार कृष्ण ने भी उद्धव को गोपियों को ज्ञान-मार्ग समझाने के लिए भेजा है।

पर यह सामंजस्य ज्यादा आगे तक सही नहीं ठहरता। जहाँ आज के राजनेता स्वार्थरत हो जनता को विस्मृत करते हैं वहीं कृष्ण का मथुरागमन एक कल्याणकारी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए है। वे व्यापक जन-हित हेतु मथुरा गए हैं।

पुनः कृष्ण ने उद्धव को इसलिए भेजा है ताकि उद्धव भी गोपियों के भक्ति रस से प्रभावित हो शुष्क ज्ञान की निस्सारता को समझें तथा भक्ति-मार्ग व भावना का प्रणयन करें।

कृष्ण का गोपियों के प्रति प्रेम कम नहीं हुआ वह अभी भी प्रगाढ़ है तथा गोपियों द्वारा कृष्ण को शासक नहीं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अपना प्रेमी माना गया है।

समग्रत: यह कहा जा सकता है कि पूर्णता में तो नहीं परन्तु एक हद तक यह व्याख्या भी भ्रमरगीत की अर्थवत्ता को और व्यापक कर सूर की प्रासंगिकता को स्थापित करती है।

यूँ भी सूर की गोपियों के माध्यम से राजनीति पर उपालंभ किया ही गया है-

"हरि हैं राजनीति पढ़ि आए"

तथा सूर ने भी राजनीति की विद्रूपता को वर्णित किया ही है -

"राजनीति की रीति सुनो हो, चरत बास्थिर खेत"।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ख) गोस्वामी तुलसीदास द्वारा प्रतिपादित रामराज्य की अवधारणा की समालोचना कीजिये। 15

गोस्वामी तुलसीदास उस सामंतवादी दौर में रचना कर रहे थे जब शासक वर्ग सिर्फ अपनी स्वार्थ सिद्धि में लिप्त था। एक तरफ भुखमरी आम बात थी तो वहीं जनता को प्रताड़ित किया जाना तथा शासक व समाज की दूरी तुलसी को व्यथित कर रही थी ऐसे में तुलसी एक आदर्श राज्य को रामराज्य के माध्यम से प्रतिपादित करते हैं।

रामराज्य में न किसी को रोग है न ही दुख, न ही कोई दुखी है न गरीब
" नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना "
तथा प्रत्येक व्यक्ति को 'सुलभ पदारथ चारि" हैं।

राम अपने सेवकों को भी आदेश देते हैं कि यदि वे कुछ गलत करें तो सेवक उनका अनुसरण त्यागने के लिए स्वतन्त्र हैं

" जौं अनीति कछु भाखौं भाई
सो मोहि त्याग बंधु बिसराई "

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसी प्रकार रामराज्य में सर्वत्र शान्ति व समानता का वातावरण है।

तुलसी रामराज्य के माध्यम से उस अवस्था से मुक्ति की बात कर रहे हैं जहाँ
"खेती न किसान को, भिखारी को न भीख
ना ही बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी"
तथा सबको 'सुंदर' व 'बिरूज सरीर' प्रदान कर रहे हैं।

रामराज्य की यह अवधारणा निश्चित तौर पर नीति- निदेशक तत्वों में वर्णित आदर्श राज्य के समकक्ष है तथा ऐसी कल्पना तुलसी की स्पष्ट राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक चेतना की उत्कृष्टता का द्योतक है।

परन्तु तुलसी के राम-राज्य में कुछ ऐसी स्थितियों की कल्पना भी की गई है जो आज की दृष्टि से न्यायसंगत नहीं कही जा सकती यथा वर्णाश्रम धर्म का पालन तथा नारी की मर्यादा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की वस्तु बना देना।

समग्रत: तुलसी की रामराज्य की अवधारणा कुछेक अपवादों को छोड़कर आधुनिक तथा कल्याणकारी राज्य संगत है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) काव्यात्मकता की दृष्टि से कबीर की भाषा का अनुशीलन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कबीर की भाषा हिन्दी कविता की आलोचना में विवाद का विषय रही है। आचार्य शुक्ल सम विद्वान जहाँ एक तरफ कबीर की उक्तियों की प्रशंसा करते हुए भी उनकी भाषागत साधारणता पर टिप्पणी करते जाते हैं।

तो वहीं दूसरी तरफ आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उनकी भाषा की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए उन्हे 'वाणी का डिक्टेटर कहा है'।

कबीर की भाषा की सबसे बड़ी विशेषता है कथ्यानुरूप शब्द चयन। उनका 'मुतिया' शब्द का प्रयोग इतना प्रभावशाली है जो कुत्ते की सारी निरीहता वफादारी को पाठक के सामने ऐसे चित्रित करता है मानो कोई कुत्ता स्वयं अपने मालिक के समक्ष दुम हिलाते खड़ा है।

उनकी व्यंग्य क्षमता अद्वितीय है। साधारण भाषा में जितने धारदार व

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तर्कपूर्ण व्यंग्य उन्होंने किये हैं वे अन्यत्र दुर्लभ हैं। यथा-

" काँकर पाथर जोरि कै, मस्जिद लई बनाय
ता चढ़ि मुल्ला बाग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय"

कबीर ने स्वयं अपनी काव्यगत साधारणता स्वीकार की है और निरक्षर होने का जिक्र किया है तब भी सहज रूप से उनकी भाषा में बिंब, प्रतीक अलंकार आदि समस्त काव्योचित तत्व सम्मिलित हो जाते हैं।

नाथ-पंथी उक्तियों में कहीं-कहीं उलट-बाँसियों व संधा भाषा के प्रयोग में अप्रतीत्व दोष व अबोधगम्यता की चर्चा आलोचकों ने की है।

तब भी कहना न होगा कि भाषा पर जैसा अधिकार इस फक्कड़ का था वैसा किसी और का नहीं"

भाषा में मानो इतनी हिम्मत ही नहीं कि इनकी किसी बात को नाहीं कर सके।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

~~जिसका~~ इन्होंने भाषा से जो कहलवाना चाहा कहलवा लिया। बन पड़ा तो सीधे-सीधे नहीं तो दरेरा देकर ^

—— x ——

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में सप्रसंग व्याख्या कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) लेकिन जैसे ही ख़बर शहर में पहुँची, वहाँ से मंत्रियों, नेताओं और अख़बारनवीसों की गाड़ियों का ताँता लग गया। आग से उठने वाले धुएँ के बादल तो एक ही दिन में छँट गए, पर शहरी गाड़ियों से उठनेवाली धूल के बादल कई दिन तक मँडराते रहे। नेताओं ने गीली आँखों और रुँधे हुए गले से क्षोभ प्रकट किया और बड़े-बड़े आश्वासन दिए। अख़बारनवीस आए तो दनादन उस राख के ढेर की ही फोटो खींचकर ले गए। दूसरे दिन अख़बार में छापकर घर-घर पहुँचा भी दिया–इस घटना का सचित्र ब्यौरा। किसी ने सवेरे खुमारी में अँगड़ाई लेते हुए, तो किसी ने चाय की चुस्की के साथ पढ़ा, देखा। देखते ही चेहरे पर विषाद की गहरी छाया पुत गई। चाय का घूँट भी कड़वा हो गया शायद। ढेर सारी सहानुभूति और दुख में लिपटकर निकला–'ओह, हॉरिबल...सिम्पली इनह्यूमन! कब तक यह सब और चलता रहेगा? त्...त्...त्!' और पन्ना पलट गया। थोड़ी देर बाद गाँववालों की ज़िंदगियों की तरह ही अख़बार भी रद्दी के ढेर में जा पड़ा।

'मन्नू भण्डारी' के 'महाभोज' उपन्यास में तत्कालीन तथा वर्तमान राजनीति की विद्रूपताओं का प्रखर निरूपण हुआ है।

राजनीतिक विद्रूपता के साथ-साथ पत्रकारिता की स्थूलता तथा आम-जन ~~की~~ मुख्यत: शहरी मध्यम-वर्ग की भाव विहीनता का चित्रण यहाँ 'मन्नू भण्डारी' ने मार्मिक व व्यंगात्मक रूप से किया है।

जैसे ही आगजनी की खबर शहर पहुँचती है तुरन्त मौके का लाभ उठाने के लिए नेता लोग गाँव पहुँचते हैं तथा इसको कवरेज देने के लिए मीडिया-कर्मी भी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किसी को भी मृत्यु के दर्द में जरा भी सहानुभूति नहीं फिर भी मृत्यु का चुनावी लाभ सबके जेहन में है।

शहरी तबका गाँव से इतना कटा हुआ है कि उसे मातम मनाने की फुर्सत ही नहीं। रोज की भाँति इस खबर को भी स्थूल अभिव्यक्तियों से लाद-कर किनारे कर दिया गया।

विशेष : 1. भाषा : साधारण बोल-चाल की खड़ी बोली का प्रयोग जिसमें अँग्रेजी के शब्दों का कथ्यानुरूप पुट मिला हुआ है। यथा- हॉरिबल इत्यादि

2. 'महाभोज' उपन्यास सांकेतिक रूप में बेलछी हत्याकाण्ड से प्रेरित है तथा इसी का वर्णन यहाँ हुआ है।

3. मीडिया व पत्रकारिता की सनसनीखेज प्रेमी प्रकृति को दर्शाया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कवित्व वर्णमय चित्र है, जो स्वर्गीय भावपूर्ण संगीत गाया करता है! अन्धकार का आलोक से, असत् का सत् से, जड़ का चेतन से, और बाह्य जगत् का अन्तर्जगत् से संबंध कौन कराती है? कविता ही न!

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत गद्यावतरण 'जयशंकर प्रसाद' के ऐतिहासिक नाटक स्कन्दगुप्त से उद्धृत है जहाँ मातृगुप्त कवि- कर्म का वर्णन कर रहे हैं।

मातृगुप्त कहते हैं कि कविता तो समस्त आनन्द की कथिनी है। यहाँ भावाभिव्यक्ति अपने सर्वोत्तम रूप में होती है और व्यक्ति को असीम आनन्द की प्राप्ति होती है। अंधेरे का उजाले से, सत्य का असत्य से और बाह्य -जीवन का आंतरिक भावनाओं से कविता ही तो मेल कराती है।

विशेष 1. भाषा तत्समीकृत तथा चिंतनप्रधान है जो आमजन के लिए कुछ क्लिष्ट हो सकती है।

2. ऐसा ही भाव 'कविता क्या है' निबंध में आचार्य शुक्ल द्वारा प्रकट किया गया है जहाँ उन्होंने कविता को भाव-योग बताया है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

3. आचार्य शुक्ल के 'बिन्दुओं के सामंजस्य' सिद्धान्त की अभिव्यक्ति

4. कविता की तुलना चित्रकला व संगीत से की गई है अर्थात समस्त कलाओं का एक ही उद्देश्य - परमानन्द की अनुभूति बताया गया है जिसे प्रसाद ने 'समरसता की स्थिति' कहा है

x

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) नर्क में पिछले सालों में बड़े गुणी कारीगर आ गए हैं। कई इमारतों के ठेकेदार हैं, जिन्होंने पूरे पैसे लेकर रद्दी इमारते बनायीं। बड़े-बड़े इंजीनियर भी आ गये हैं, जिन्होंने ठेकेदारों से मिलकर भारत की पंचवर्षीय-योजनाओं का पैसा खाया। ओवरसीयर हैं, जिन्होंने उन मजदूरों की हाजिरी भरकर पैसा हड़पा, जो कभी काम पर गए ही नहीं। इन्होंने बहुत जल्दी नर्क में कई इमारतें तान दी हैं।

'हरिशंकर परसाई' जी ने समस्त सामाजिक राजनीतिक विद्रूपताओं का वर्णन अपने व्यंग्यों में किया है।
यहाँ वे 'भोलाराम का जीव' के माध्यम से ~~रिश्वतखोरी~~ 'रिश्वतखोरी' को उद्धृत ~~किया~~ कर रहे हैं।

भोलाराम के जीव को ढूँढने निकला चित्रगुप्त नर्क के माध्यम से भ्रष्टाचार को वर्णित कर रहा है। ठेकेदारों पर व्यंग्य करते हुए वह बताता है कि कैसे सरकारी पैसों का दुरूपयोग रद्दी इमारतें बनाने में होता है। इंजीनियर- ठेकेदार सब मिलकर झूठे दस्तावेज तैयार कर पैसा अपनी जेब में भर लेते हैं तथा जो काम होता है वह अत्यन्त निम्न दर्जे का होता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this

विशेष: 1. सहज भाषा में प्रखर व्यंग्य करना परसाई जी की विशेष विशेषता है।

2. भाषा में फारसी प्रचलित शब्दों से परहेज नहीं किया गया है।

3. ऐसे ही चित्रण 'शरद जोशी' जी के निबंधों व कहानियों में दिखते हैं।

4/

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) देखो विद्या का सूर्य पश्चिम से उदय हुआ चला आता है। अब सोने का समय नहीं है। अँगरेज का राज्य पाकर भी न जगे तो कब जागोगे। मूर्खों के प्रचंड शासन के दिन गए, अब राजा ने प्रजा स्वत्व पहिचाना। विद्या की चरचा फैल चली, सबको सब कुछ कहने-सुनने का अधिकार मिला, देश-विदेश से नई-नई विद्या और कारीगरी आई। तुमको उस पर भी वही सीधी बातें, भाँग के गोले, ग्रामगीत, वही बाल्यविवाह, भूत-प्रेत की पूजा, जन्मपत्री की विधि! वही थोड़े में संतोष, गप हाँकने में प्रीति और सत्यानाशी चालें! हाय अब भी भारत की यह दुर्दशा!

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत गद्यावतरण 'भारतेन्दु हरिचन्द्र' के नाटक भारत-दुर्दशा से उद्धृत है। यहाँ भारतेन्दु आधुनिकता के आगमन का संकेत करते हुए आह्वान कर रहे हैं कि समस्त बुराइयों को त्याग कर आगे बढ़ने का समय आ गया है।

पश्चिम की शिक्षा तर्क व आधुनिकता पर आधारित है। अब सामन्ती शासन का अन्त हो चुका है तथा अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता का अधिकार सबको प्राप्त हुआ है। अगर अब भी हम नहीं सुधरे तो भारतवर्ष का विनाश निश्चित है। हम अभी भी उन्हीं बालविवाह, ज्योतिष आदि पाखण्डों में लिपटे हैं जबकि हमें आधुनिक, तर्कशील, वैज्ञानिक शिक्षा को अपनाकर आगे बढ़ना चाहिए।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this

1. सहज, सुबोध खड़ी बोली जिसमें आरंभिकता के कुछ लक्षण विद्यमान हैं। जैसे - चरचा, बान्यगीत इत्यादि

2. नव-जागरण से प्रेरित आत्म-मूल्यांकन का भाव व्याप्त है।

3. अंग्रेजी शासन का स्वरूप तब तक स्पष्ट नहीं हुआ था इसलिए इसके प्रति सम्मान का भाव दिखता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ङ) जब समस्त हिन्दू जाति की एक वैदिक सम्प्रदाय न रही तो वही मसल चरितार्थ हुई कि "एक नारि जब दो से फँसी जैसे सत्तर वैसे अस्सी"। हमारी एक हिन्दू जाति के असंख्य टुकड़े होते-होते यहाँ तक खण्ड हुए कि अब तक नये-नये धर्म और मत-प्रवर्त्तक होते ही जाते हैं।

प्रस्तुत गद्यावतरण बालकृष्ण भट्ट जी के निबंध 'साहित्य जन-समूह के हृदय का विकास' है से उद्धृत है। यहाँ लेखक नवजागरण से प्रेरित आत्मावलोकन के भाव से वर्तमान दुर्दशा पर भूतकालीन परिस्थितियों के आलोक में विचार कर रहा है।

भट्ट जी कहते हैं कि जब हिन्दू जाति ने वेदों का त्याग कर दिया और नये-नये ग्रंथों पर आस्था बढ़ने लगी तो सबके अपने भिन्न मत प्रकट हुए और नये-नये धर्म विकसित होने लगे। प्राचीन हिन्दू-धर्म कई हिस्सों में बँट गया।

विशेष : 1. लोकभाषा का सुन्दर प्रयोग जिसमें मुहावरों को प्रमुख स्थान दिया जाता है।

2. सहज, सुबोध भाषा

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. अन्य मतों व धर्मों के प्रति भिन्नता का भाव दिखता है।

4. 'नवजागरण' व राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदर्शवाद से प्रेरित इतिहास के गौरवमयी चित्रण का भाव प्रकट हुआ है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'दर्शन में प्रसाद की गहरी अभिरुचि थी जिसे उन्होंने अपनी रचनाओं में घुला दिया है।' स्कंदगुप्त के संदर्भ में विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) मोहन राकेश का लक्ष्य हिन्दी में मौलिक रंगमंच की स्थापना का था। अपने नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' में वे अपने इस लक्ष्य की प्राप्ति में कहाँ तक सफल हो सके हैं? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मोहन राकेश उन नाटककारों की परम्परा में आते हैं जिसका सूत्रपात भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के यहाँ हुआ तथा जो मंचन को नाटक का अभिन्न अंग मानते हैं।

मोहन राकेश ने अपने लेखों में व 'आषाढ़ का एक दिन' की भूमिका में अपने रंगमंचीय विचारों को अभिव्यक्त किया है। उनका उद्देश्य अंग्रेजी व पाश्चात्य रंगमंच जो कि तकनीक पर आधारित था, से पृथक मानव व शब्द तत्व पर ~~आदि~~ आधारित मौलिक हिन्दी रंगमंच की स्थापना करना था। और 'आषाढ़ का एक दिन' में उनका यह प्रयास काफी हद तक सफल भी रहा है।

आषाढ़ का एक दिन के समस्त दृश्य मल्लिका के घर के ही हैं तथा कुछ साधारण सामान यथा चारपाई, दो चादरें, दो दीपकों आदि से मंच सज्जा सम्पन्न हो जाती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अंतिम दृश्य तक आते-आते पादरें कुछ फट जाती हैं तथा एक दीपक बुझ जाता है जो अंबिका की मृत्यु का द्योतक है। इस प्रकार साधारण साधनों पर मंच आधारित है।

ध्वनि तत्व का सफल प्रयोग ~~वहाँ~~ 'मेघों के समयानुकूल गर्जन' में तथा कालिदास के कश्मीर गमन के समय घोड़े की टापों की आवाजों में दिखता है। जहाँ ध्वनि की सघनता से आशा का और फिर विरलता से निराशा का वातावरण निर्मित होता है।

इसी प्रकार अभिनय संकेतों व आंगिक क्रियाओं का सफल प्रयोग रंगमंच के मानव तत्व की सफलता का द्योतक है। मल्लिका के द्वारा विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न तरह से होंठ चबाये जाना राकेश का अद्वितीय प्रयोग है।

~~काश्मीर~~ कश्मीर व उज्जयिनी का मात्र सूचित होना जहाँ कालिदास के अंतिम अंक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के लंबे स्वगत कथनों को सार्थक करता है वहीं संवाद योजना की कसावट पाठक को विस्मृत।

कहना न होगा कि हिन्दी के मौलिक रंगमंच का अच्छा स्वप्न साकार करने में उन्होंने सार्थक प्रयास किया है जो अभी तक कायम है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'स्कंदगुप्त' नाटक के नामकरण की उपयुक्तता पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

~~नाटक~~ रचना चाहे नाटक हो या उपन्यास या फिर कोई पद्य रचना। मूलतः नाम ऐसा होना चाहिए जो रचना के मूल प्रतिपाद्य को पाठक तक संप्रेषित करने में सफल हो, जो संक्षिप्त हो तथा रचनाकार की प्रयोगशीलता का द्योतक हो।

प्रसाद के समक्ष यूँ तो 'चरित्र-प्रधान' नाटकों की कोई सुदीर्घ परम्परा नहीं थी तब भी 'स्कन्दगुप्त' नाम का चयन उनके द्वारा पश्चिमी नाट्य-परम्परा व संस्कृत नाट्य परंपरा के सम्मिश्रण को दर्शाता है।

उन्होंने अपने मूल उद्देश्य 'सांस्कृतिक आदर्शवाद' व राष्ट्रीयता की अभिव्यक्ति का दारोमदार जिस चरित्र पर डाला है वह स्कंदगुप्त ही है। ~~वहि~~ वह वीर, पराक्रमी युवक है जो नायकोचित गुणों से सम्पन्न है।

प्रसाद का उद्देश्य स्थूल एकावलम्बी चरित्र का सृजन नहीं बल्कि ~~नायक~~

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अपने दर्शनानुसार मानवोचित चरित्र का सृजन करना था।

उन्होंने अपने इस उद्देश्य पूर्ति का आलम्बन भी स्कन्द-गुप्त को बनाया तथा उसे मानवोचित द्वंद्वों से युक्त बताया जैसे "बौद्धों का निर्वाण, योगियों की समाधि व पागलों की विस्मृति - एक साथ चाहिए"

नाटक का नाम तो देवसेना भी रखा जा सकता था क्योंकि वह सबसे सशक्त चरित्र बनकर उभरी है पर तब राष्ट्रीय सांस्कृतिक जागरण की उपलब्धि पूर्ण नहीं हो पाती।

इसी प्रकार कोई घटना प्रधान नाम भी कथ्य को सम्पूर्णता में व्यक्त नहीं कर पाता क्योंकि नाटक किसी एक घटना पर आधारित नहीं है।

अतः 'स्कन्दगुप्त' ~~नाटक~~ सम्पूर्णतः उपयुक्त नाम है जो ऐतिहासिकता,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दर्शन व 'राष्ट्रीय चेतना' को एकसाथ व्यक्त करता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'भारत-दुर्दशा' नाटक की अभिनेयता पर प्रकाश डालिये। 15

भारतेन्दु नाटककारों की उस परम्परा के प्रणेता थे जो नाटकों के मंचन को नाटक का अनिवार्य अंग मानते थे। उन्होंने स्वयं अभिनय भी किया तथा निर्देशन भी तथा नाटकों का लेखन भी अभिनयोचितता को ध्यान में रखकर किया।

'भारत-दुर्दशा' की भाषा शैली ऐसी है जो आम-जन ग्राह्य है तथा उच्चारण की दृष्टि से सरल है इसलिए अभिनय करने वाले अभिनेता को दुरूहता का सामना नहीं करना पड़ता।

पुनः भारतेन्दु ने समस्त पात्रों के वेश-भूषा वर्णन का सम्पूर्ण ध्यान रखा है यथा भारत-दुर्दैव का आधा क्रिस्तानी तथा आधा मुसलमानी भेष' जो अभिनयोचित सहयोग हेतु काम्य है।

भारतेन्दु ने निर्देशकों की सरलता हेतु

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

ध्वनि तथा प्रकाश संबंधी निर्देश भी जहाँ-तहाँ दिये हैं हालांकि ऐसी परंपरा उस समय मौजूद नहीं थी। यथा - ~~प्रकाश~~ अंधेरे का संकेत इत्यादि

कहना न होगा कि भारतेन्दु ने नाटकों में अभिनयोचित चांचल्य व सरलता का पर्याप्त ध्यान रखा है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation